Q No पिगू का कल्याण अर्थशास्त्र (Pigouvian Welfare Economics)

Arthur Cecil Pigou आधुनिक कल्याण अर्थशास्त्र (Modern Welfare Economics) के जनक माने जाते हैं। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Economics of Welfare में कल्याण अर्थशास्त्र का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक प्रतिपादन किया। पिगू का मानना था कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य केवल धन, उत्पादन और राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन स्तर और आर्थिक कल्याण में वृद्धि करना भी है।

पिगू ने यह स्पष्ट किया कि किसी देश की आर्थिक प्रगति तभी सार्थक मानी जाएगी जब उसके फल समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें। यदि राष्ट्रीय आय बढ़ती है लेकिन उसका लाभ केवल कुछ व्यक्तियों तक सीमित रहता है, तो उसे वास्तविक आर्थिक विकास नहीं कहा जा सकता। इसलिए उन्होंने आय के समान वितरण, सरकारी हस्तक्षेप, सामाजिक न्याय तथा बाह्य प्रभावों (Externalities) पर विशेष बल दिया।

कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ (Meaning of Welfare Economics)

कल्याण अर्थशास्त्र अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो यह अध्ययन करती है कि उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किस प्रकार किया जाए ताकि समाज का अधिकतम आर्थिक एवं सामाजिक कल्याण प्राप्त हो सके।

पिगू के अनुसार–

"आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन के माध्यम से मापा जा सकता है।"

सामाजिक कल्याण एवं आर्थिक कल्याण

पिगू ने कल्याण को दो भागों में विभाजित किया–

1. सामाजिक कल्याण (Social Welfare)

सामाजिक कल्याण एक व्यापक अवधारणा है जिसमें समाज के लोगों का संपूर्ण विकास सम्मिलित होता है।

इसमें शामिल हैं–

शिक्षा

स्वास्थ्य

सुरक्षा

स्वच्छ पर्यावरण

सामाजिक न्याय

समान अवसर

जीवन की गुणवत्ता

नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास

2. आर्थिक कल्याण (Economic Welfare)

आर्थिक कल्याण सामाजिक कल्याण का वह भाग है जिसे धन के माध्यम से मापा जा सकता है।

इसमें शामिल हैं–

आय

उत्पादन

रोजगार

उपभोग

निवेश

बचत

जीवन स्तर

पिगू के कल्याण सिद्धांत की आधारभूत मान्यताएँ (Assumptions)

व्यक्ति अपने हित को समझता है।

आर्थिक कल्याण को धन के माध्यम से मापा जा सकता है।

सीमांत उपयोगिता आय बढ़ने पर घटती है।

आय का पुनर्वितरण सामाजिक कल्याण बढ़ाता है।

सरकार सार्वजनिक हित में हस्तक्षेप कर सकती है।

पूर्ण प्रतियोगिता को आदर्श स्थिति माना गया है।

कर एवं सब्सिडी के माध्यम से बाजार की कमियों को दूर किया जा सकता है।

पिगू के कल्याण सिद्धांत के प्रमुख तत्व

1. राष्ट्रीय आय और आर्थिक कल्याण

पिगू के अनुसार राष्ट्रीय आय बढ़ने से आर्थिक कल्याण में वृद्धि हो सकती है, परंतु यह तभी संभव है जब आय का लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचे।

यदि राष्ट्रीय आय बढ़े लेकिन आय का अधिकांश भाग केवल कुछ धनी व्यक्तियों को मिले, तो समाज का वास्तविक कल्याण नहीं बढ़ेगा।

2. आय का समान वितरण (Equal Distribution of Income)

पिगू का मानना था कि समाज में आय का अत्यधिक असमान वितरण आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को जन्म देता है।

उन्होंने घटती सीमांत उपयोगिता (Law of Diminishing Marginal Utility) के आधार पर कहा कि–

गरीब व्यक्ति के लिए अतिरिक्त ₹1000 की उपयोगिता बहुत अधिक होती है।

अमीर व्यक्ति के लिए वही ₹1000 अपेक्षाकृत कम महत्व रखता है।

इसलिए यदि अमीरों से कर लेकर गरीबों के कल्याण पर खर्च किया जाए, तो समाज का कुल कल्याण बढ़ सकता है।

3. सीमांत उपयोगिता का सिद्धांत

पिगू ने अपने सिद्धांत का आधार घटती सीमांत उपयोगिता को बनाया।

इस सिद्धांत के अनुसार–

जैसे-जैसे किसी व्यक्ति की आय बढ़ती है, प्रत्येक अतिरिक्त आय से मिलने वाली संतुष्टि कम होती जाती है।

इसी कारण आय का पुनर्वितरण सामाजिक कल्याण को बढ़ा सकता है।

4. सरकारी हस्तक्षेप (Government Intervention)

पिगू मुक्त बाजार के समर्थक होने के साथ-साथ यह भी मानते थे कि बाजार हमेशा समाज के हित में कार्य नहीं करता।

इसलिए सरकार को–

प्रगतिशील कर लगाना चाहिए।

गरीबों को सहायता देनी चाहिए।

शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर व्यय बढ़ाना चाहिए।

सार्वजनिक वस्तुओं की व्यवस्था करनी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए नियम बनाने चाहिए।

बाह्य प्रभाव (Externalities)

पिगू की सबसे महत्वपूर्ण देन बाह्य प्रभाव (Externalities) की अवधारणा है।

बाह्य प्रभाव का अर्थ

जब किसी व्यक्ति या संस्था की आर्थिक गतिविधि का प्रभाव किसी तीसरे व्यक्ति पर पड़े और उसका मूल्य बाजार में शामिल न हो, तो उसे बाह्य प्रभाव कहते हैं।

सकारात्मक बाह्य प्रभाव (Positive Externalities)

जब किसी गतिविधि से दूसरों को लाभ मिले।

उदाहरण

शिक्षा

टीकाकरण

वृक्षारोपण

अनुसंधान

सार्वजनिक पार्क

नकारात्मक बाह्य प्रभाव (Negative Externalities)

जब किसी गतिविधि से दूसरों को हानि पहुँचे।

उदाहरण

वायु प्रदूषण

जल प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण

प्लास्टिक प्रदूषण

औद्योगिक धुआँ

पिगू कर (Pigouvian Tax)

नकारात्मक बाह्य प्रभावों को कम करने के लिए पिगू ने कर लगाने का सुझाव दिया।

उदाहरण

कार्बन टैक्स

प्लास्टिक टैक्स

प्रदूषण कर

तंबाकू एवं सिगरेट पर उच्च कर

इन करों का उद्देश्य केवल राजस्व प्राप्त करना नहीं बल्कि समाज को होने वाली हानि को कम करना है।

पिगू सब्सिडी (Pigouvian Subsidy)

सकारात्मक बाह्य प्रभावों को बढ़ाने के लिए सरकार को सब्सिडी देनी चाहिए।

उदाहरण

शिक्षा पर छात्रवृत्ति

सौर ऊर्जा पर सब्सिडी

जैविक खेती को सहायता

टीकाकरण कार्यक्रम

अनुसंधान एवं विकास को प्रोत्साहन

बाजार विफलता (Market Failure)

पिगू ने बताया कि कई बार बाजार संसाधनों का उचित वितरण नहीं कर पाता।

बाजार विफलता के प्रमुख कारण–

बाह्य प्रभाव

सार्वजनिक वस्तुएँ

एकाधिकार

सूचना की कमी

आय की असमानता

इन परिस्थितियों में सरकार का हस्तक्षेप आवश्यक हो जाता है।

सार्वजनिक वस्तुएँ (Public Goods)

पिगू ने सार्वजनिक वस्तुओं के महत्व को स्वीकार किया।

इनकी विशेषताएँ–

सभी लोग इनका उपयोग कर सकते हैं।

किसी को उपयोग से वंचित नहीं किया जा सकता।

एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के उपयोग में कमी नहीं आती।

उदाहरण

राष्ट्रीय सुरक्षा

सड़कें

स्ट्रीट लाइट

सार्वजनिक पार्क

स्वच्छ वायु

पिगू के कल्याण सिद्धांत की विशेषताएँ

- आर्थिक कल्याण पर विशेष बल।
- सामाजिक न्याय का समर्थन।
- आय के समान वितरण की वकालत।
- सरकारी हस्तक्षेप को उचित ठहराना।
- बाह्य प्रभावों का वैज्ञानिक विश्लेषण।
- कर एवं सब्सिडी नीति का विकास।
- पर्यावरण संरक्षण का आधार।
- सार्वजनिक वित्त के विकास में योगदान।
- पिगू के कल्याण सिद्धांत के गुण (Merits)
- कल्याण अर्थशास्त्र को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया।
- सामाजिक कल्याण की अवधारणा को विकसित किया।
- आय के समान वितरण का महत्व स्पष्ट किया।
- बाह्य प्रभावों का व्यवस्थित विश्लेषण किया।
- आधुनिक पर्यावरण नीति का आधार प्रदान किया।
- सरकार की आर्थिक भूमिका को स्पष्ट किया।
- सार्वजनिक व्यय और कर नीति के महत्व को समझाया।
- शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकारी निवेश का समर्थन किया।
- आधुनिक सार्वजनिक अर्थशास्त्र के विकास में योगदान दिया।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने कल्याण को केवल आय नहीं बल्कि मानव विकास (Human Development), स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण से भी जोड़ा है।

व्यवहार में आय का पूर्ण समान वितरण संभव नहीं है।

आधुनिक संदर्भ में पिगू के विचारों की प्रासंगिकता

आज के समय में पिगू के विचार पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, कार्बन उत्सर्जन, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक असमानता जैसी समस्याओं के समाधान में पिगू कर (Pigouvian Tax) और पिगू सब्सिडी (Pigouvian Subsidy) का व्यापक उपयोग किया जा रहा है। कार्बन टैक्स, प्लास्टिक पर कर, स्वच्छ ऊर्जा को सब्सिडी तथा शिक्षा और स्वास्थ्य पर सरकारी व्यय जैसी नीतियाँ पिगू के विचारों से प्रेरित मानी जाती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

पिगू का कल्याण अर्थशास्त्र आधुनिक अर्थशास्त्र की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि से नहीं, बल्कि आर्थिक संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और अधिकतम सामाजिक कल्याण से मापी जानी चाहिए। बाह्य प्रभावों, सरकारी हस्तक्षेप, आय के पुनर्वितरण तथा कर एवं सब्सिडी संबंधी उनके विचार आज भी आर्थिक नीति निर्माण में अत्यंत उपयोगी हैं।